अध्याय 8

मनोलैंगिक विकास
(PSYCHOSEXUAL DEVELOPMENT)

मनोलैंगिक विकास का अर्थ *(Meaning of Psychosexual Development)*

'मनोलैंगिक' शब्द का तात्पर्य है लैंगिकता (sexuality) के सभी पक्षों (aspects) से है। इसके अतिरिक्त इसका सम्बन्ध मानसिक तथा शारीरिक पक्षों से भी है। अतः 'मनोलैंगिक' शब्द के तीन संघटक (components) हैं : लैंगिक (sexual), मानसिक (mental) तथा शारीरिक (physical)।

मनोलैंगिक विकास के अन्तर्गत इन तीनों संघटकों अर्थात् लैंगिक संघटक, मानसिक संघटक तथा शारीरिक संघटक के विकास का अध्ययन किया जाता है। इस विकास क्रम में जैविक प्रणोदनों तथा वातावरण के बीच पारस्परिक क्रियाएँ घटित होती हैं। इन क्रियाओं के संतुलित होने पर सामान्य व्यक्तित्व या व्यवहार का विकास होता है जबकि इन क्रियाओं के असंतुलित होने की स्थिति में व्यक्तित्व विकृतियाँ या व्यवहार विकृतियाँ विकसित होती हैं।

मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ
(Stages of Psychosexual Development)

मनोविश्लेषण (psychoanalysis) के प्रतिपादक **सिगमंड फ्रायड** (Sigmund Freud, 1856–1939) के अनुसार मनोलैंगिक विकास की छः अवस्थाएँ हैं, जबकि **इरिक्सन** (Erikson, 1902–1994) ने आठ अवस्थाओं का उल्लेख किया है। हम यहाँ **फ्रायड** द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित छः अवस्थाओं का उल्लेख करना चाहेंगे :—

(क) मौखिक अवस्था *(Oral Stage)*

फ्रायड के अनुसार मनोलैंगिक विकास की पहली अवस्था को 'मौखिक अवस्था' कहा जाता है। यह अवस्था जन्म के समय वर्तमान रहती है। फ्रॉयड का कहना है कि इस अवस्था में शिशु को लैंगिक आनन्द (sexual pleasure) स्तनपान के द्वारा मिलता है। स्तनपान ही उसके पोषण का साधन है। इसमें चूसने की क्रिया की प्रधानता रहती है। जब कभी स्तन चूसने को नहीं मिलता तब बालक अँगूठा चूस कर ही लैंगिक आनन्द प्राप्त करता है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि चूसने में उसे विशेष सुख का अनुभव होता है। इसलिए पेट भरा रहने पर भी वह ऊँगली चूसने के लिए इच्छुक रहता है। कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि बच्चा स्तनपान के समय दूसरे संवेदनशील अंग को मलते रहता है। इस सम्बन्ध में फ्रॉयड का मत है कि यही क्रिया आगे चलकर हस्तमैथुन (masturbation) में परिणत हो जाती है।

इस अवस्था में बच्चे को अपने और अपनी माता में कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ता है। उसे अपने ही शरीर से आनन्द प्राप्त होता है, परन्तु इसकी चेतना भी उसे नहीं रहती है। विद्वानों ने उसके इस प्रकार के आनन्द को आत्म-प्रेम या आत्म-कामुकता (self-love or auto-eroticism) कहा है। वास्तव में यह शैशव-लैंगिकता (infantile-sexuality) का मुख्य लक्षण है। इस अवस्था में मुँह तथा मुँह के आस-पास के अंगों से ही बच्चों को लिंग (sex) का अनुभव होता है। चूसने और निगलने से उनके तनाव दूर हो जाते हैं और उनसे आनन्द

वह अपने को बहुत ही शक्तिशाली समझने लगता है। उसे यह अच्छी तरह से ज्ञात हो जाता है कि मल-मूत्र त्यागने से वयक्तिगत आनन्द तो मिलता है, इसके अतिरिक्त उसे पुरस्कार भी मिलता है। अतः वह अपनी आक्रामक प्रवृत्ति (aggressive tendency) को अभिव्यक्त करने तथा माता-पिता को अपमानित करने के लिए ऐसा करता है। *"बिछावन पर मल-मूत्र त्याग करना एक ही समय उसकी आक्रामक प्रवृत्ति तथा व्यक्तिगत आनन्द की वाह्य अभिव्यक्ति है।"*

इस निष्कासन अवस्था में आत्म-कामुकता (auto eroticism) वर्तमान रहती है, पर इसका स्वरूप विशेषकर गुदात्मक रहता है। इस समय उसमें आत्म-प्रियता भी रहती है। 'ईगो' के विकसित हो जाने के कारण वास्तविकता के सिद्धान्त (reality principle) से ही शिशुओं का व्यवहार निर्धारित होता है। फिर भी उसके व्यवहार में सुख के सिद्धान्त (pleasure principle) की प्रधानता रहती है। परन्तु, कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि वास्तविकता की रक्षा के लिए उसे सुख के सिद्धान्त को भी ठुकराना पड़ता है। वह आगे चलकर उन्हीं सुखद व्यवहारों को करता है जिन्हें करने से वास्तविकता से सम्बन्ध खत्म नहीं होता है।

इस अवस्था में सुपर-ईगो का विकास प्रारम्भ हो जाता है। इसके साथ बच्चों में यौन भिन्नता (sex difference) का भी ज्ञान होना प्रारम्भ हो जाता है। वह समझने लगता है कि उसे एक खास यौन का व्यक्ति बनना है।

धारणात्मक अवस्था में बच्चों को मूत्र त्यागने में आनन्द नहीं मिलता है; बल्कि उसे रोकने में ही आनन्द प्राप्त होता है। इसका कारण यह है कि वह मल-मूत्र धारण करने के सामाजिक महत्त्व को समझ जाता है। उसे यह भी ज्ञात हो जाता है कि इसे रोककर रखने में श्लेष्मा से युक्त (mucous membrane) उत्तेजना से भी आनन्द का अनुभव होता है। वह सोचने लगता है कि जब माता-पिता इसे त्यागने पर इतना जोर देते हैं तो ये चीजें अवश्य ही महत्त्वपूर्ण हैं। उसे धारण करके वह अपने माता-पिता के प्रति आक्रामक प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति करता है।

इस अवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिशु मुँह, गुदा (anus) और योनि (vagina) में कुछ अन्तर नहीं समझता है। इसी प्रकार वह शिश्न (penis), चुचुक (nipple) और मल (feces) को भी अचेतनावस्था में समान समझता है। इस अवस्था के बाद लिंग प्रधानावस्था (phallic stage) का आगमन होता है।

(ग) लिंग प्रधानावस्था *(Phallic Stage)*

तीन-चार वर्ष की अवस्था में शिशु लिंग प्रधानावस्था में प्रवेश करता है। इस समय वह अपनी जननेन्द्रियों में अधिक रुचि रखने लगता है। इसका कारण यह है कि इस अवस्था में जननेन्द्रियाँ अत्यधिक संवेदनशील रहती हैं। जननेन्द्रियों के संवेदनशील रहने के कारण इस समय सुख-सिद्धान्त (pleasure principle) की प्रधानता रहती है। इस अवस्था में वह विपरीत-लिंग (opposite sex) के व्यक्तियों से शारीरिक सम्पर्क की रुचि द्वारा हस्तमैथुन की रुचियों का प्रदर्शन करता है। इसमें प्रदर्शन-प्रवृत्ति (exhibitionistic tendency) की भी प्रधानता रहती है। बालक-बालिकाएँ आत्म-प्रदर्शन करने में अधिक दिलचस्पी लेते हैं। बच्चे अपनी ही जननेन्द्रियों में काफी रुचि रखते हैं। वे अपनी जननेन्द्रियों को प्रायः हाथ से छूते रहते हैं जिसे बड़े लोग पसन्द नहीं करते हैं। वे उन्हें डराते हैं कि यदि वे वैसा करेंगे तो जननेन्द्रियों को काट दिया जाएगा। यहाँ तक कि कभी-कभी सचमुच चाकू या कैंची लेकर काटने की धमकी देते हैं। बच्चे डर जाते हैं कि सचमुच वे उनकी जननेन्द्रियों को

Vivo V9
Dual Rear Camera

की प्राप्ति होती है। विद्वानों ने बतलाया है कि बच्चों का शरीर संवेदनशील होता है और कहीं भी स्पर्श करने पर अधिक आनन्द मिलता है। परन्तु, कुछ अंग अधिक संवेदनशील होते हैं और उसे स्पर्श करने पर अधिक सुख का अनुभव होता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि लैंगिक आनन्द इस अवस्था में केवल ज्ञानेन्द्रियों से सम्बद्ध न होकर शरीर के अन्य भागों में फैला रहता है।

यह अवस्था जन्म से लेकर आठवें महीने तक रहती है, परन्तु यह समझना गलत है कि आठवें महीने में इसे समाप्त हो जाने के बाद दूसरी अवस्था का आगमन होता है। वास्तव में विभिन्न अवस्थाएँ इस तरह सन्निहित या मिली-जुली रहती हैं कि इन्हें एक दूसरे से अलग करना सम्भव नहीं है। जन्म से लेकर आठवें महीने तक इस मनोलैंगिक विकास की अवस्था को 'मौखिक-स्तनपान' (oral sucking) की अवस्था के नाम से पुकारते हैं।

फ्रॉयड ने दूसरी मौखिक अवस्था को मौखिक-दाँत काटने की अवस्था (oral biting stage) की संज्ञा दी है। यह अवस्था आठवें महीने से अठारहवें महीने तक चलती है। परन्तु इस अवस्था में चूसने की क्रिया समाप्त नहीं हो जाती है। इस समय दाँत काटने की प्रधानता रहती है। इसी के द्वारा वह लैंगिक आनन्द लूटता है। इस अवस्था में बच्चों के दाँत निकल आते हैं। इसलिए वे चूसने, निगलने तथा दाँत-काटने के द्वारा ही लैंगिक आनन्द प्राप्त करते हैं। अतः बच्चों में छिन्न-भिन्न कर देने की आक्रामक प्रवृत्ति (aggressive tendency) का भी प्रादुर्भाव हो जाता है। माता के प्रति उसमें विरोधी भाव (घृणा और प्रेम) नजर आते हैं। माता के द्वारा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, जिसके कारण वह उसे प्यार भी करता है और माता से स्वतन्त्र रहने के कारण वह उससे घृणा करता है। प्रारम्भ में वह आत्म-कामुक (auto-erotic) रहता है, पर इस समय उसमें आत्म-सम्मोहन (narcissism) का आगमन हो जाता है। वह अपने शरीर से केवल आनन्द ही प्राप्त नहीं करता है, बल्कि उसे अपने-आप का ज्ञान भी हो जाता है। अर्थात् इस समय उसमें 'ईगो' (ego) का प्रादुर्भाव हो जाता है। इसलिए वह अपने आपको प्यार करने लगता है। **मेलनी क्लाईन** और **ग्लोवर** (Melanie Klein and Glover) का मत है कि इसी अवस्था में सुपर-ईगो (super-ego) का भी विकास होने लगता है।

(ख) गुदा अवस्था *(Anal Stage)*

मौखिक अवस्था के बाद गुदा अवस्था का आगमन होता है। इसमें लैंगिक-संवेगात्मक रुचि (sexual-emotional-interest) मुँह से हटकर गुदा में चली आती है। अर्थात् शिशु को लैंगिक आनन्द गुदा की प्रतिक्रियाओं से होता है। इस अवस्था का आरंभ छट्ठे महीना में हो जाता है और यह चौथे वर्ष तक चलती रहती है। इस अवस्था में गुदा की प्रधानता रहती है। इसके दो पहलू हैं। पहले को निष्कासक (expulsive) और दूसरे को धारणात्मक (retentive) पहलू कहते हैं।

निष्कासक अवस्था में शिशु को मल-मूत्र त्यागने में लैंगिक आनन्द का अनुभव होता है; क्योंकि इससे उसका शारीरिक तनाव दूर होता है। इसके अतिरिक्त, वह समझने लगता है कि माता-पिता उचित रूप से और नियत समय तथा स्थान पर मल-मूत्र त्यागने पर जोर देते हैं। उसे यह ज्ञान हो जाता है कि मल-मूत्र गंदी चीजें हैं। इसे त्यागना आवश्यक है। इसके साथ-साथ वह इसे धारण करने के महत्त्व को भी समझने लगता है। इसलिए उसे रोककर लैंगिक आनन्द का अनुभव करता है। इस समय उसका ईगो बहुत विकसित हो जाता है और